वर्ष 19 अंक 04
27 अप्रैल 2021
एम.पी.एव.आई.एन. 2003 12367
पोस्ट दिनांक 30 अप्रैल 2021

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2018-20
पृष्ठ संख्या 28
एक प्रति 20.00 रु.

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्

वैदिक रवि मासिक

वर्ष 19 अंक–04

27 अप्रैल 2021
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2077
दयानन्दाब्द 194

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गॉधी
कार्या. फोन : 0755–4220549

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन : 07324–226566

सह सम्पादक
श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा

सदस्यता
एक प्रति – 20,00 रू.
वार्षिक – 200,00 रू.
आजीवन – 1000,00 रू.

विज्ञापन की दरें
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 ..... 500 रू.
पूर्ण पृष्ठ (अन्दर) ..... 400 रू.
आधा पृष्ठ (अन्दर का) ..... 250 रू.
चौथाई पृष्ठ ..... 150 रू.

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय
  मानवीय आपदाओं के निर्माता कौन ? 4
- बोध कथा चिड़िया और महात्मा 7
- पाप से दूर हों 8
- यज्ञ दिवस एक शुभ सर्वहितकारी संकल्प 9
- व्यक्तित्व विकास के उपाय.. 11
- सत्संगति 13
- नव संवत्सरोत्सव (संवत्सरेष्टि) 15
- आर्य समाज स्थापना दिवस 18
- गो मूत्र के सरलतम घरेलु औषधीय उपयोग 21
- यज्ञ का महत्व 22
- यज्ञ दिवस 3 मई को सार्थक 23
- शोक समाचार 24
- आर्यों जागो और जगाओ 25

सम्पादकीय :

मानवीय आपदाओं के निर्माता कौन ?

जीवन में अनेको बार हम किसी न किसी आपदाओं, विपत्तियों से जूझते है, भोगते है अथवा भोगते हुए देखते हैं। जब जब इस प्रकार की त्रासदी पूर्ण घटनाओं में फसते हैं तब तब ये दोष अपने को छोड़कर दूसरों पर लगाते हैं। इन दुर्घटनाओं की जवाबदारी कभी अपने उपर भी है यह कोई नहीं मानता।

वास्तव में हमारे सोचने का नजरिया तौर तरीका ही बदल गया हैं। किसी लाभ या उपलब्धी में अपना यशोगान करने में हम माहिर है, वही किसी क्षति या विपरीत घटित स्थिति से हम पल्ला झाड़कर दूर खड़े हो जाते हैं। काश मनुष्य इन विपरीत क्षतिकारक त्रासदी वाली परिस्थितियों पर गंभीरता से सोचकर अपने को भी उससे जोड़ले तो इन समस्याओं से बहुत कुछ छुटकारा पाया जा सकता हैं।

जीवन में दुःख क्लेश या हमें हानी पहुंचाने वाले तीन कारण होते हैं। पहला प्राकृतिक, दूसरा दूसरों के द्वारा पहुंचाया गया और तीसरा स्वयं हमारी अपनी कमियों, गलतियों या कर्तव्यों की उपेक्षा से।

प्राकृतिक आपदा जैसे अनावृष्टि, अतिवृष्टि, बाढ़, भूकम्प, ओलावृष्टि, ज्वालामुखि आदि से उत्पन्न स्थिति। ये हम मनुष्यो के हाथ में नहीं है इसके कारण प्राय अज्ञान, आकस्मिक और प्रकृति जन्य होते हैं।

दूसरा कारण भी इसी प्रकार का है किसी दूसरे व्यक्ति या देश द्वारा होने वाली क्षति चाहे वह उनकी गलती से, लापरवाही से या जानबूझ कर किये गए कारणों से हो। यह भी हमारे हाथ में नहीं हैं।

इन समस्याओं का सबसे बड़ा और मुख्य कारण है मानव समाज की अपनी गलतियां, उपेक्षाएं हांनि कारक कार्यो को प्रोत्साहन। आज जीवन में जीवनोपयोगी मानवीय गुणों में निरंतर गिरावट आ रही हैं। पशुवत ये मानव स्वार्थ में लिप्त होकर अज्ञानता के कारण जिस वृक्ष की डाल (शाखा) पर बैठा है उसे ही काट रहा हैं।

परमात्मा की इस पावन सुन्दर बगीची को उजड़ने में लगा है लहलहाती हरियाली को विरान कर रहा हैं। वृक्ष जो प्रकृति का सन्तुलन बनाने में वृष्टि करवाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, प्रदुषण से हमें बचाते है, अनेक प्रकार से लाभ दायक है उन पेड़ों को बेरहमी से काट रहे हैं।

वायु प्रदूषण करने वाले संसाधनों और कार्यो को निरन्तर बढ़ाया जा रहा हैं। डीजल पेट्रोल से वाहनों के माध्यम से निरंतर बढ़ रहे बड़े बड़े कारखानों के प्रदूषित जल और धुएं के कारण वायूमण्डल दूषित हो रहा है। घर घर में फ्रीज, ए. सी. भी प्रदूषण बढ़ा रहें है। स्वच्छ स्वास्थ वर्धक वायु को दूषित करके हम अनेक प्रकार के रोगों को आमन्त्रित कर रहे है।

इन सब साधनों के उपयोग की आवश्यकता भी है उनका उपयोग नही करने की भी सलाह नही है। किन्तु इन्हें सीमित किया जा सकता है। वायु प्रदूषण से बचनें के लिए पेड़ पौधों को प्रचुर मात्रा में बढ़ाना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण और लाभ कारी अध्यात्म, और विज्ञान से जुड़ा कार्य यज्ञ है। थोड़ी सी साम्रगी और शुध्द गौ धृत से किया गया यज्ञ प्रदूषण दूर करने का आश्चर्य जनक और अचूक उपाय है। यह वैज्ञानिक और प्रामाणिक सत्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो प्रत्येक को प्रतिदिन दैनिक हवन करने का इसी भावना से संदेश दिया।

हमारे पूर्वज ऋषि मुनियों ने शास्त्रों ने यज्ञ महिमा का बहुत वर्णन किया है। पहले राज्य की ओर से बड़े बड़े यज्ञ राजा करवाते थे। किन्तु हमने इस पवित्र और सर्वोत्तम कार्य को त्याग कर दूषित वातावरण को बढ़ाने में सहयोग कर रहे हैं।

नदियो का पवित्र जल हमने दूषित कर दिया। गन्दी नालीयां नाले और फ्रेक्ट्रियों का दूषित जल नदियों में मिलाकर उनकी शुद्धता समाप्त कर दी। यही दूषित जल पीने में खेती करने में उपयोग हो रहा हैं। रोगो आपदाओं के निमन्त्रण के कारणों में यह भी महत्वपूर्ण हैं।

अधिक पैदावार प्राप्त करने के लालच मे हमने पानी का जल स्तर सैकड़ो फूट नीचे कर दिया। कुए हेन्ड पंप के माध्यम से निरन्तर जल खीचने का परिणाम पृथ्वी के जलवायू को हमने प्रभावित कर दिया। गर्मी, बढ़ रही है समय बे समय वर्षा हो रही है यह सब हमारे ही कर्मो का परिणाम हैं। दूषित अशुद्ध मिलावट वाले पदार्थो का सेवन यदि भोजन, पानी, खाद्य पदार्थ अशुद्ध है हानीकारक है तो निश्चित ही स्वास्थ पर बुद्धी पर, मानसिकता को प्रभावित करते हैं।

खाने की वस्तुओं मिलावट हो रही है स्वास्थ के हानिकारक पदार्थो से नकली घी, दूध, पनीर, दही, मावा, बाजार में बिक रहा हैं। फसलों पर सब्जियो फलो के पौधो पर जहरीली कीटनाशक दवाईया छिड़क कर सब्जी व फलों के आकार बढ़ाने हेतु जा रहे हैं।

इन सबसे शरीर रोग ग्रस्त हो रहा है रोगो के विरूद्ध प्रतिरोगात्मक क्षमता कम हो रही हैं। शरीर कमजोर हो रहा है पोषक तत्वों की पूर्ति नहीं हो पा रही हैं। कमजोर दिलो और शरीरों पर रोगों का प्रभाव शीघ्र होता हैं।

इस प्रकार हमारा आहार खाना पीना भी एक बहुत बड़ा कारण हैं। व्यायाम, आसन, प्राणायाम, करने से कुछ हद तक स्वयम् को सुरक्षित कर सकते हैं किन्तु इसमें रूची नहीं हैं। इसके विपरीत तले, गले, मैदा युक्त, भारी वस्तुओं का सेवन तथा देर रात को भोजन करने का शौक जीवन की सबसे बड़ी हानि को निमन्त्रण देना हैं।

एक और कारण हमे रोग ग्रस्त करने का हैं। डाक्टरों और दवाईयों को ही कुछ व्यक्ति अपने जीवन का महत्वपूर्ण अंग मानकर दवाईयों का छोटी से छोटी तकलीफ में उपयोग करने के आदि हो जाते हैं। एलोपेथी की दवाईयों में कई दवाईयां एक साथ कई रोगो के उपचार में काम आती है ऐसी बनाई जाती हैं। इस कारण शरीर में अनावश्यक दवाइयां भी पहुंचती है जिसके साइड इफेक्ट होते है और अन्य रोगो का जन्म होता हैं।

सबसे अन्त में और महत्वपूर्ण कारण है उपेक्षा। आज मनुष्य उपेक्षा आदर्शो की, संयम की, अनुशासन की कर रहा हैं। जबकि उपेक्षा करनी चाहिए उन आदतों की व्यवहारों की जिनसे वह स्वंय और दूसरों को दुःखी करता है। आज इसका विपरीत हो रहा हैं। कोरोना से बचने के लिए संक्रमित ना हम होवें ना दूसरों को करें। इसके लिए 2 मीटर की दूरी, मास्क, और सेनीटाइजर का उपयोग करने की शासन व प्रशासनिक स्तर पर मीडिया के माध्यम से जन सामान्य को सलाह दी जा रही है सचेत किया जा रहा हैं। किन्तु इन जीवन रक्षक सूचनाओं की उपेक्षा की जा रही हैं। ऐसा करना सामाजिक और राष्ट्रीय अपराध हैं।

वेक्सीन जो संक्रमित होने से पूर्व हमारे बचाव की बहुत लाभकारी है किन्तु उसके प्रति भी विशेष जागरूकता नहीं हैं। समाज और राष्ट्र हित में इस महान संकट से निपटने के लिए हमें सरकार की, प्रशासनिक अधिकारियों की डॉक्टर की सलाह मानकर उनके सहयोगी बनना चाहिए।

इस प्रकार मानवीय आपदाओं को दूर करने उनसे बचने के लिए हम स्वयं जबावदारी लेवें, क्योंकि हम स्वयं हमारे कर्त्तव्यों की उपेक्षा करके विभिन्न प्रकार की समस्याओं, आपदाओं को स्वयं ही निमंत्रण दे रहे है।

बोध कथा

चिड़िया और महात्मा

एक प्रसिद्ध महात्मा ने अपना घर बार छोड़कर जंगलों में जीवन के रहस्यों को जानने हेतु कठिन साधना की। परन्तु उन्हें आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। इससे उनका मनोबल गिरने लगा। अन्त में उन्होंने हार मानकर घर की और प्रस्थान कर लिया।

रास्ते में उन महात्मा को एक नदी दिखाई दी। वे थके हुए थे, इस कारण उसी नदी के किनारे बैठ गये। उस महात्मा को यहाँ बैठे अभी कुछ ही समय बीता था कि उन्होंने देखा कि एक चिड़िया अपने मुंह में दूर से मिट्टी भरकर लाती और उसी नदी के किनारे पर डाल देती और मिट्टी लेने फिर चली जाती।

यह सिलसिला लगातार चलता जा रहा था, तो उन महात्मा से न रहा गया। उन्होंने उस चिड़िया से जिज्ञासावश पूछ ही लिया कि – यह तुम क्या कर रही हो ?

इस पर चिड़िया ने उत्तर दिया – महात्मा जी मैं इस नदी के किनारे को ऊंचा करने का प्रयास कर रही हूं।

उस महात्मा ने फिर पूछा – तुम ऐसा किसलिए कर रही हो ?

उस चिड़िया ने उत्तर दिया – इस नदी किनारे मेरा घोंसला था। इसकी बाढ़ ने मेरे बच्चों को डुबो दिया है। जब किनारा ऊंचा हो जाएगा तो मेरे घोंसले को बाढ़ का खतरा नहीं रहेगा। इसलिए ऐसा कर रही हूं।

महात्मा उसके जवाब से बड़े चकित हुए और उस चिड़िया को समझाने की दृष्टि से बोले – यह किनारा तो पर्याप्त लम्बा–चौड़ा है और तुम तो बहुत छोटी हो। क्या तुम इस काम को करने में कामयाब हो पाओगी ?

चिड़िया बोली, मुझे तो अपना काम करना ही है, समय चाहे कितना भी लगे, मैं निश्चय ही कामयाब होऊंगी।

उस चिड़िया के उच्च मनोबल, दृढ़ संकल्प शक्ति और कर्मठता को देखकर उन महात्मा को एक नई दृष्टि प्राप्त हुई। तब उनके मन में एक नया मनोबल जागृत हुआ। उन्होंने उसी क्षण घर वापस जाने का विचार अपने दिमाग से निकाल दिया और पुनः जंगल में जाकर साधना में लीन हो गए।

इस कहानी का तात्पर्य यह है कि, यदि व्यक्ति के अन्दर उँचा मनोबल और स्थायी संकल्पशक्ति हो तो वह बड़े से बड़ा लक्ष्य हासिल कर सकता है।

असफल वही होता है, जिनके पास ऊँचे मनोबल एवं दृढ़ संकल्पशक्ति का अभाव होता है।

पाप से दूर हों

ओ३म् परोपे हि मनस्पाप किसशस्तानि शंससि।
परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि संचर गृहेषु गोषु में मनः।।

– अर्थवेद

हे (मनस्पाप) मन के पाप तू (परा उप एहि) दूर भाग जा हे पापी मन। (किम्) क्यो (अशस्तानि) निन्दित बातों को (शंससि) सोचता है। (परेहि) हट जा। हे मन के पाप (त्वा) तुझको (न कामये) मै नहीं चाहता। (वृक्षान्+वनानि) वृक्षों और वनों में अर्थात निर्जन स्थानों में (संचर) विचरो (में) मेरा (मनः) मन तो (गृहेषु) मेरे शरीर रूप घर की सफाई में विकारों से दूर करने में (गोषु) इन्द्रियों को सही दिशा की ओर उन्मुख करने में तथा वेद पठन पाठन में गौ संरक्षक व गौ संवर्द्धन में लगा है।

भावार्थ – मन मानव जीवन का आधार है, योगीराज श्रीकृष्ण कहते हैं – **"मन एव मनुस्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो"** मन ही मनुष्य के बन्धन का कारण है, मन ही मनुष्य के लिए मोक्ष का कारण है। मन का कपि बन्दर कहा गया है बहुत उछल कूद मचाता है मन के संकल्प विकल्प होते रहते है – इसमें उलझकर मनुष्य आकुल व्याकुल हो जाता है मन के विकार काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर, के वशीभूत होकर मनुष्य शनैः शनैः पतन के गर्त में जाने लगता है मन एक सीढी है जिससे ऊपर भी जा सकते है और उपर से नीचे भी आ सकते है। किन्तु साधना में रत साधक मन के पापों को कठोर शब्दों में कहता है।

मेरा तुझसे अब कोई सम्बन्ध नहीं है मैं तुझे नहीं चाहता। मैं अब समझ गया हूं – ये मन के विकार नरक के पथ है। मै तो अब दृढ संकल्प के साथ प्रभू का स्मरण करते हुए संयम विवेक की पतवारों से जीवन नौका खे रहा हूँ – योगासन प्राणायमादि से जीवन को प्रेय मार्ग से श्रेय मार्ग की ओर ले जा रहा हूँ। मै तो अपने शरीर की अर्न्तमन की सफाई में लगा हुआ हूँ। मै गौ अर्थात इन्द्रियों को सात्वीक और बलशाली बना रहा हूँ – वेदवाणी का जीवन में पठन पाठन और उसे जीवन में उतार रहा हूँ। गौ सर्वद्धन और गौ संरक्षण में जीवन आर्पित किए हुए हूँ। मन से बुरे विचारों को दूर कर रहा हूँ। हे मन के पाप भाग जा दूर हो जा। इस प्रकार की दृढ़ता आने से मन के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति हो और बन्धनों से मुक्ति हो सकती है।

श्री राजेन्द्र व्यास उज्जैन

यज्ञ दिवस एक शुभ सर्वहितकारी संकल्प

आज अनेक प्रकार के दिवस भिन्न भिन्न नामो व कारणों से देश विदेश में मनाये जाते हैं। जिनकी सार्थकता क्या है कितनी है यह अलग बात हैं। इसी क्रम में 21 जून पूरे विश्व में योग दिवस के रूप में मान्य किया गया।

जन सामान्य जब योग के महत्व को समझा तो उसने उसे तुरन्त अपना लिया। यहां योग को मुख्य रूप से आसन प्राणायाम समझा जा रहा हैं। किन्तु स्वस्थ मस्तिष्क और उत्तम स्वास्थ के लिए अत्यन्त लाभप्रद है यह जानकर आज समस्त विश्व योग का दिवाना हो गया हैं।

इसी प्रकार यज्ञ भी एक सर्वहितकारी व्यक्ति से विश्वतक के लिए लाभप्रद प्रक्रिया हैं। इसे श्रेष्ठ कर्मों में मानते हुए ही कहा – **"यज्ञौ वै श्रेष्ठतमं कर्मः"** निश्चित रूप से सुख, शान्ती, संगठन का आधार यज्ञीय भावना ही हैं। परमार्थ, दया, दान, सम्मान, सहयोग **सर्वे भवन्तु सुखिनः** जैसी पवित्र भावना का द्योतक हमारे शुभ कर्म है जो परहित किए गए होते है यही तो यज्ञीय कर्म हैं। एक सही भावना से यज्ञ करने वाले में उपरोक्त सभी गुणों को देखा जा सकता हैं। निश्चित ही यह सर्वहिताय सद्‌गुणों की भावना हैं।

यज्ञ को हवन, अग्निहोत्र, होम अनेक नामों से जाना जाता हैं। समस्त विश्व यदि इस विचार धारा से जुड़ जावे या विश्व के अधिकांश व्यक्ति इसे आत्मसात कर लेवें तो धरती पर स्वर्ग की कामना वाले यज्ञ करें। कहा गया **"स्वर्ग कामो यजेत्"**

संसार का प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है किन्तु सुख की वृद्धी करते हुए और उसे बढ़ाने की सार्मथ्य केवल मानव योनी मे ही हैं। इसका कारण है धर्मा चरण मनुष्य ही अपनी बुद्धी का, स्वतन्त्रता का, साधनों का उपयोग करते हुए अपने मानवीय धर्म का निर्वाह कर सकता हैं। तात्पर्य यह कि धर्माचरण से इस योनी मे सुख सभंव है और धर्म के लिए यज्ञ आवश्यक है कहा गया –

त्रयो धर्म स्कन्धाः यज्ञो ध्यानं दानमिति"

धर्म के पायदानो में यज्ञ सर्व प्रथम बताया गया।

आज आवश्यकता है इस मानवता से पतित होते हुए पथ भ्रष्ट, धर्म भ्रष्ट, अमानवीय व्यवहारों में लिप्त समाज को याज्ञिक विचार और व्यवहार की। इस दृष्टि से संसार का सर्वोत्तम कर्म यज्ञ है जो आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही दृष्टि से लाभ कारी हैं। जीवन पवित्रता का सर्वोत्तम मार्ग है जैसा कि योगीराज श्रीकृष्ण चन्द्र जी ने उपदेश

देते हुए कहा –

यज्ञोदानं तपश्चैव पावनानी मनीषिणां।

जीवन की पवित्रता का साधन यज्ञ तप व दान हैं।

यज्ञ मात्र धार्मिक कर्म ही नहीं पूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रिया भी हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो, भौतिक विज्ञान की दृष्टि से उन्नत विश्व के अग्रणी अनेक देश इसे क्यों अपनाते ?

प्रदूषण मापक – वैज्ञानिक यंत्रों से इसका परीक्षण करके इसे प्रदूषण मुक्त करने की सर्वोत्तम एवं अत्यन्त कम समय की विधी माना हैं। इसलिए यज्ञ करो और दूसरो को भी प्रेरित करों यह समस्त मानवजाति के लिए सुखद वरदान सिद्ध हो सकता हैं।

जिस प्रकार योग को संसार अपना रहा है यज्ञ के प्रति भी यही स्थिति बनेगी हमारे पूर्वज ऋषियों का महर्षि दयानन्द का सपना पूर्ण होगा।

स्वास्थ्य के लिये थोड़ा हंसिये भी

0 तीन गप्पोड़ी सड़क पर खड़े होकर बातें कर रहे थे।

पहला बोला – मेरे पिताजी बहुत बड़े तैराक हैं, वो चार घण्टे तक पानी के अन्दर ही तैर सकते हैं।

दूसरा बोला – बस इतनी सी बात, मेरे पिताजी तो पूरे दिन पानी के अन्दर तैर सकते हैं।

तीसरा बोला – क्या बच्चों जैसी बातें कर रहे हो, मेरे पिताजी तो चार साल पहले गए थे पानी के अन्दर तैरने और अभी तक ऊपर नहीं आए हैं।

0 एक बेरोजगार युवक नौकरी के लिए एक कम्पनी के मैनेजर के पास गया और बोला – सर आप मुझे महीने के एक लाख रूपए वेतन, एक फ्लैट, एक कार दे सकते हो तो मैं नौकरी के लिए तैयार हूँ।

मैनेजर बोला – मैं आपको दो लाख रूपए वेतन, दो कार, दो फ्लेट दूंगा।

यह सुनकर युवक बोला – सर, आप मजाक तो नहीं कर रहे हैं।

मैनेजर ने कहा – श्रीमान शुरूआत तो आपने ही की थी।

व्यक्तित्व विकास के उपाय..

1. उत्तरदायित्व को वहन करना :

जब व्यक्ति किसी कार्य को करने की जिम्मेदारी लेता है तो समझो उसकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो गया। जो लोग स्वयं जिम्मेदारी या उत्तरदायित्व लेने में आनाकानी करते हैं वे केवल दूसरों को दोष देने तक ही सीमित रह जाते हैं। जिम्मेदारी और स्वतन्त्रता हाथ में हाथ डाले चलती है। किसी समाज का पतन चोर उचक्कों से इतना नहीं होता जितना अच्छे लोगों द्वारा दायित्व न लेकर निठल्ले बैठे रहने से होता है। जब अच्छे लोग निष्क्रिय होकर बैठ जाएँ तो बुराई को पनपने का अवसर मिल जाता है।

2. दूसरों की बातों को ध्यान से सुनना :

यदि आप चाहते हैं कि दूसरे लोग आपकी बात को ध्यान से सुने तो आपको भी दूसरों की बातों को ध्यान से सुनना चाहिए, इससे दूसरा व्यक्ति अपने आपको महत्वपूर्ण समझने लगता है और फिर वह आपकी बात को भी ध्यान से सुनता है। अच्छा श्रोता बनने के लिए दूसरे व्यक्तियों को उनकी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उनसे प्रश्न पूछें। बीच में बाधा न डालें। कहने वाले के अभिप्राय को समझने का प्रयत्न करें।

3. उत्साह :

उत्साह के बिना कोई बड़ा काम पूरा नहीं होता। उत्साह और सफलता साथ साथ चलते हैं। उत्साह से आत्मविश्वास बढ़ता है। जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है। उत्साह और किसी कार्य को करने की इच्छा व्यक्ति को सफलता के चरम शिखर पर ले जाती है। उत्साह से आत्मबल बढ़ता है। उत्साह एक प्रकार की आदत है जिसे उत्साही पुरूषों के संग से सीखा जा सकता है।

4. प्रतिज्ञा पूरी करना :

जैसी हानि प्रतिज्ञा भंग करने वाली की होती है वैसी दूसरों की नहीं। जिससे जैसी प्रतिज्ञा की हो उसे पूरा करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। प्राण जाए पर वचन न जाई। कार्य वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्। किसी काम को पूरा करने की प्रतिज्ञा कर लेने पर हर स्थिति में उसे पूरा करना सुदृढ़ व्यक्तित्व की पहचान है। अपने वचन को निभाने वाले का सब विश्वास करते हैं।

5. कृतज्ञ होना :

किए हुए उपकार को मानना, उपकार करने वाले को धन्यवाद देना तथा समय आने पर उसका प्रत्युपकार करना कृतज्ञता और उपकार को भुला देना कृतघ्नता है, जिसका शास्त्रकारों ने कोई प्रायश्चित नहीं लिखा। कृतज्ञता व्यक्तित्व को निखारती है। हमारे माता–पिता ने अनेक कष्ट सहन कर हमारा पालन पोषण किया है तो हमारा भी यह कर्तव्य है कि वृद्धावस्था में उनकी हर संभव सहायता कर उन्हें सुखी रखें।

परन्तु किसी पर उपकार करने के पश्चात प्रत्युपकार की भावना नहीं रखनी चाहिए कि हमने अमुक व्यक्ति की इस कार्य में सहायता की, इसलिए वह भी हमारा सहयोग करे। जो व्यक्ति उपकार करके उसका मूल्य प्रत्युपकार में चाहता है वह साधु नहीं है जो अनुपकार करने वालों के साथ भी उपकार करता है वही साधु या सज्जन कहलाने योग्य है।

6. विश्वास पात्र बनना :

परस्पर का व्यवहार विश्वास के द्वारा ही होता है। योग्यता के साथ किसी का विश्वास पात्र बनना भी आवश्यक है। बिना विश्वासपात्र बने कोई भी जिम्मेदारी नहीं दी जा सकती। किसी से अच्छे संबंध बन जाने पर कष्ट सहकर भी उन्हें बनाए रखना चाहिए।

7. विनम्र बनना :

विनम्रता सब गुणों का आधार है। सादगी और विनम्रता महान बनने के दो गुण है। विनम्रता के बिना आत्मविश्वास केवल अहंकार ही है। सच्ची विनम्रता लोगों को आपकी ओर आकर्षित करती है। विनम्रता से अभिप्राय है दूसरों का भी ध्यान रखना और अहंकार को त्यागना। विनम्र व्यक्ति कम पढ़ा–लिखा होने पर भी जीवन पथ में आगे बढ़ता चला जाता है। शिष्टाचार का अभ्यास घर से ही प्रारंभ करना चाहिए। बहुत से प्रतिभाशाली और कार्य में कुशल व्यक्ति विनम्रता और शिष्टाचार की न्यूनता के कारण अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं। अभिमानी का सिर नीचा होता है। अपने मार्ग में स्थित बड़ी चट्टान, वृक्ष, भवनादि को नदियॉ धराशायी कर देती है परन्तु उनके किनारों पर उगे बेंत के झाड़ को कुछ भी नहीं कहती क्योंकि उनमें पूर आने पर अन्य पदार्थ सीना ताने खड़े रहते हैं।

सत्संगति

सत्संगति का अर्थ है, सत्य का संग और सज्जनों की संगति जिनसे सत्य विचार प्राप्त होवें। बड़े पुण्यों के द्वारा ही सज्जनों से मेल होता है। अच्छे लोगों के संयोग से दूसरों में भी भलाई आती है। इसके विपरीत बुरे लोगों के मेल से बुराई, दुर्गुण मिलते है।

वैसे सभी मनुष्य चाहते हैं कि हम अच्छे बनें, गुणी हों, लोग हमारा आदर करें और हमें यश प्राप्त हो। पर अच्छे बनने के साधनों को सब लोग भली प्रकार जानते नहीं और यदि जानते भी हैं, तो उन्हें अपनाते नहीं।

इस संसार में बुराईयों और बुरे लोगों की अधिकता है, जिस प्रकार खेती में फसल के पौधे से अधिक घास–फूंस उगती है। सद्‌गुणों और सज्जनों की बहुत कमी है। यह प्रत्यक्ष अनुभव की बात है कि अच्छा करने के लिए सत्पुरूषों की संगति और सद्‌गुणों के प्रति आकर्षण का आदर होना चाहिये। बुरे लोगों से बचना भी उतना ही जरूरी है। अनुभवी लोगों का कहना है, **"जैसा संग, वैसा रंग"** इसलिए संतों ने सत्संग की महिमा विशेष रूप से गाई है। कहा गया –

सत्संग परम तीर्थम्,
सत्संग परम पदम
तस्मातर्ग सर्वम् परितज्य,
सत्संग सततं कुरु

अर्थात सत्संग परम तीर्थ है, सत्संग ही परम पद है, सत्संग हेतु हम सब त्याग कर ही नियमित सत्संग करें।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस बारे में ठीक ही कहा है :–

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी सो पुनि आध।
तुलसी संगत साधु की कटे कोटि अपराध।।

संस्कृत के कवि का यह कथन भी सर्वथा उपयुक्त है।

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यम्,
मानोन्नति दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्,
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।।

सत्संग महिमा

मति की जड़ता को हर, वाणी में सत्य सदा सिंचन करती।
सम्मान बढ़ाती है पापों को दूर हटाया है करती।।
करती है चित्त प्रसन्न और यश का विस्तार किया करती।
सत्संगति कही मित्र, क्या–क्या उपकार न जीवन का करती।।

पर सत्पुरूषों की पहचान होना भी सरल नहीं है। क्योंकि बाहर से भले दिखाई देने वाले लोग भीतर से बुरे निकल आते हैं। इसलिए एकाएक किसी की बाहरी वेशभूषा या मीठी वाणी से प्रभावित न होकर अधिक निकट सम्पर्क में जाकर उसकी परीक्षा करनी चाहिये। जो संयमी हों, सुख–दुःख में कभी विचलित न होते हों, जिनकी शान्ति कष्ट पाकर भी भंग न होती हो और जिनका मन आत्मा और परमात्मा के चिन्तन में ही सदा लीन रहता हो, वे ही सत्पुरूष हैं। ऐसे महान पुरूषों का संग पाकर हम धन्य हो जाते हैं। पर कपटी तथा दुराचारी लोगों की संगति भूलकर भी नहीं करनी चाहिये। इस बारे में बाल्मिकी रामायण में एक शिक्षाप्रद कहानी इस प्रकार कही गई है –

पम्पा सरोवर के किनारे एक बगुला अपना एक पांव उठाकर मस्ती से चल रहा था। श्रीराम जी ने उसे देखकर भाई लक्ष्मण से कहा –

"पश्य लक्ष्मण पम्पायां कीदृशो धार्मिको बकः।
मन्दं मन्दं पदं धत्ते जीवानां वधशंकया।।

हे लक्ष्मण ! देखो, पम्पा सरोवर के किनारे यह बगुला कैसा धर्मात्मा दिखाई देता है, जो जीवों की हत्या होने के डर से धीमे–धीमे पांव रख रहा है। तब लक्ष्मण ने यह सुनकर एक मच्छ के द्वारा इसका उत्तर बड़े ही स्पष्ट व सरल ढ़ंग से दिलाते हुए कहा :–

बकोऽयं धार्मिको राम येनाहं निष्कुलीकृतः।
सहवासी विजानीयात् चरित्रं सहवासिनः।।

यह बगुला कितना धार्मिक है, यह मैं ही जानता हूँ। इसने तो मेरा सारा वंश ही उजाड़ दिया। पड़ोसी ही पड़ोसी के चरित्र को जानता है।

सत्पुरूष ही सच्चे तीर्थ हैं। उनके अधिक सम्पर्क में रहना, सत्शास्त्रों को पढ़ना–पढ़ाना और सच्चिदानन्द परमात्मा की उपासना करना सत्संग है।

नव संवत्सरोत्सव (संवत्सरेष्टि)

चैत्र सुदि प्रतिपदा

हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर दिव्य ज्ञान वेद को छोड़कर पाश्चात्य श्रृंखला में आबद्ध होकर अपनी अस्मिता को भी खो बैठे हैं। किसी ने ठीक ही कहा है – "बाहर की लगी हवा ऐसी कि घर का भी आंगन भूल गये।" पाश्चात्य विचारों को ही श्रेष्ठ व सर्वोत्तम उचित नहीं यह मानसिक गुलामी की जंजीरों में जकड़े होने के कारण इक्कीसवीं सदी मनाने की विचार मूढ़ता है, भारत के भाल पर महा कलंक है, "शास्त्र कहता है – **प्रयोजनं विहाय मन्दोऽपि न प्रवर्तते** अर्थात् बिना प्रयोजन के मूर्ख से मूर्ख भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता फिर सभ्य कहलाने वाले शिक्षित वर्ग तथाकथित काले अंग्रेज क्यों बाह्य सांस्कृतिक के बोझ से बौझिल हो अन्धकूप में गिरकर संस्कृति के वास्तविक पर्वो की पर्वता की अव्हेलना कर रहे हैं। भारतीय पंचाग के अनुसार वर्ष का प्रथम महीना चैत्र है। अतः चैत्र सुदि प्रतिपदा से ही "नव वर्ष" प्रारंभ होता है।

नव संवत्सरारम्भ संसार की प्रायः सभी सभ्य जातियों में भिन्न–भिन्न रूप में मनाया जाता है। नव संवत्सर को भारतीय गुड़ी पड़वा के नाम से भी पुकारते हैं।

सिंधी भाई चेती चॉद के रूप में मनाते हैं। ईसाई पहली जनवरी को न्यू ईयर्स डे के रूप में मनाते हैं। पारसियों में जश्न नौरोज के नाम नूतन दिवस जो सूर्य के मेष राशि में प्रवेश करने पर मनाया जाता है।

ईसवीं सन् ईसाई मत के संस्थापक ईसा मसीह से प्रारंभ होता है। अज्ञानी से अज्ञानी व्यक्ति भी जानता है कि घण्टे दिन सप्ताह पक्ष मास ऋतु अथवा वर्ष का परिवर्तन किसी व्यक्ति के मरण अथवा जन्म से नहीं नापा जा सकता।

वस्तुतः काल की गणना ईश्वर के अधीन है और काल का प्रवाह अनादि है। ईश्वर की सृष्टि रचना के द्वारा अर्थात् सूर्य व चन्द्रमा की उत्पत्ति से काल की गणना प्रारंभ होती है। वर्तमान मानव सृष्टि के लिए काल की गणना सूर्य एवं चन्द्रमा की उत्पत्ति से अर्थात् आज से 1,96,85,31,14 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई है।

सिद्धान्त शिरोमणि एवं हिमाद्री आदि ज्योतिष ग्रंथों के प्रमाण से इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि व्यक्ति के जन्म मृत्यु से काल की गणना करना अज्ञानता है क्योंकि वास्तविक नव वर्ष का प्रारंभ जनवरी से न होकर चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से होता है।

चैत्रे मासि जगद् ब्रह्म ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रन्तु, तदा सूर्योदये सति।।

अर्थात् चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत् की रचना की।

लंका नगर्यामुद्याच्च भानोस्तस्यैव वारं प्रथम वभूव।
मद्योःसितादेर्दिन मास वर्ष युगादिकानां युगपत्प्रवृत्तिः।।

अर्थात् लंका नगरी में सूर्य के उदय होने पर उसी के वार अर्थात् आदित्यवार में चैत्र मास शुक्ल पक्ष के आरम्भ में दिन मास युग आदि एक साथ आरम्भ हुए।

किन्तु पश्चिमी अन्धानुकरण के कारण नव वर्ष का स्वरूप ही ओझल कर दिया। एक जनवरी से नव वर्ष में किसी भी प्रकार का वैज्ञानिक आधार नहीं है। एक जनवरी में कोई नवीनता नहीं दिखलाई देती। दिनो के बीत जाने पर वन उपवन, वनस्पतियों में पीलापन होकर पतझड़ प्रारंभ हो जाता है। जीवन में उत्साह, उमंग, यौवनता प्राधान्य होना चाहिए क्योंकि **"युवैव धर्म शील स्यात्"** परन्तु वृक्ष बूढ़े होकर यौवनता हीन हो जाते हैं क्योंकि इस समय शिशिर ऋतु होती है। अस्तु चैत्र में नई ऋतु का आगमन होता है वह आती है वसन्त ऋतु वेद मे कहा है कि मधु और माधव अर्थात् चैत्र बैशाख में बसन्त ऋतु होती है। बसन्त ऋतु में न अधिक गर्मी होती है मौसम सम शीतोष्ठा होता है उस समय समीर मन्द–मन्द गति से प्रवाहित होती है न तेज, न धीमी वातावरण भी न अधिक, न शुष्क, न आर्द्र अतः वसन्त कुसुमाकर वस्तुतः ऋतु में नव वर्ष का प्रारम्भ मानना वैज्ञानिक दृष्टि से ठीक ही होगा।

चैत्र से नव वर्ष को मानना प्रभु के अटल नियम व्यवस्था व नैसर्गिक कारण भी है जैसे नई कोपलों का निकलना पशुओं के बाल झड़ना और नये बाल रूएं उगने लगते हैं, पक्षियों के पंख पीछों का टूटना तथा नये परों का उगना, कोयल का पंचम राग अलापना, आम्र बौरों का आना ये सब बसन्त ऋतु में ही होता है।

सन् 1564 में फ्रांस के राजा चार्ल्स दशम ने 1 जनवरी से नव वर्ष प्रारंभ की राजाज्ञा निकाली किन्तु अधिकांश लोग 1 अप्रैल से ही नव वर्ष मनाते रहे, इससे नाराज हो राजा ने उन लोगों को मूर्ख की संज्ञा दे दी और एक अप्रैल को मूर्ख दिवस कहा जाने लगा। इसके परिणाम स्वरूप नव वर्ष को प्रारंभ एक अप्रैल की बजाय 1 जनवरी से माना जाने लगा। किन्तु यह राज शक्ति के भय से हुआ। विचारपूर्वक नहीं।

सनातन धर्मी सभी भारतीय विक्रम संवत् को स्वीकारते हैं क्योंकि यह मत निरपेक्ष संवत् है। इसी दिन विक्रमादित्य का राजतिलक हुआ था इससे ही विक्रमी संवत् प्रारंभ हुआ था। विक्रमादित्य का जन्म छिप्रा किनारे बसी उज्जयिनी नगरी में हुआ, इनके पिता महेन्द्रादित्य गणनायक थे। महर्षि वात्सायन भारद्वाज की अध्यक्षता में **"शकारि"** की उपाधि दी गई, उसी दिन से विक्रमीय संवत् प्रारंभ किया गया।

वह समाज, संगठन, जाति व देश अपना अस्तित्व खो देता है जो अपनी धरोहर संस्कृति को भूल जाता है। आज सनातन संस्कृति पर चहुंओर से प्रहार हो रहे हैं किन्तु इसका दोष किसी दूसरे पर मढ़ने के स्थान पर आत्म चिन्तन करके जानना चाहिए, जो याथा तथ्य हो उसे स्वीकार करना चाहिए।

सुप्त स्वाभिमान को फिर से जगाये।
नव वर्ष शुभ सब ही मनाये।।

नव वर्ष मंगलमय, जय हर्ष–हर्ष जय–जय।

– पं. रामलाल शास्त्री "विद्याभष्कर" महू

महर्षि दयानन्द के प्रेरक प्रसंग –

ब्रह्मचर्य

ऋषि दयानन्द ब्रह्मचर्य की मर्यादा का कितना ध्यान रखते थे उसका कुछ अनुमान इस घटना से किया जा सकता है कि एक दिन जब वे मथुरा में यमुना तट के विश्रान्त घाट पर समाधिस्थ थे, उस समय एक देवी ने श्रद्धा से अपना सिर उनके पॉव पर रख दिया तब उन्होंने प्रायश्चित रूप में तीन दिन तक उपवास रखा था।

वीरता

कर्णवास में महर्षि दयानन्द एक दिन गंगा तट पर उपदेश दे रहे थे। बरोली के राव कर्णसिंह कुछ हथियार बन्द साथियों के साथ वहॉ आये और कुछ बातचीत करते–करते वे इतने क्रोध में आ गये कि उन्होंने तलवार खींचकर स्वामीजी पर आक्रमण कर दिया। स्वामी जी तलवार छींनकर दो टुकड़े कर दिये और राव साहिब को पकड़कर कहा कि "मैं तुम्हारे साथ इस समय वही सलूक कर सकता हूँ जो किसी आततायी के साथ किया जा सकता है, परन्तु मैं सन्यासी हूँ, इसलिए छोड़ देता हूँ, जाओ ईश्वर तुम्हें सुमति देवे।"

आर्य समाज स्थापना दिवस

– प्रकाश आर्य, महू

कहा जाता है आवश्यकता आविष्कार की जननि होती है। उस आवश्यकता के अनुसार ही उसके निदान की व्यवस्था होती है। अज्ञान में लिप्त मानव समाज जब सत्य से भटक जाता है तो उसे कोई न कोई आशा की किरण सत्य मार्ग का दर्शन करा देती है। यह हमारे प्राचीन इतिहास में अनेकोबार हुआ। समाज और राष्ट्र का मार्गदर्शन कर सही मार्ग दिखाने वाले अनेक महापुरूष हुए हैं। यह भारत भूमि ऋषियों, सन्तों और महापुरूषों की पुण्य भूमि है। जहां अनेक विश्व विख्यात महापुरूषों ने जन्म लिया और इसे कर्म भूमि बनाया जिसे संसार ने सर्वोच्च मानकर उन्हें आदर्श के रूप में स्वीकार किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती भी इसी श्रृंखला में एक उद्‌भट विद्वान अदम्य साहस के प्रतीक, युग निर्माता, सनातन संस्कृति के प्रबल समर्थक वेद प्रचारक, समाज व राष्ट्र के लिए अपना सबकुछ बलिदान करने वाले महापुरूष के रूप में स्थापित हुए।

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन काल में लगभग 3500 पुस्तकों व ग्रंथों का विभिन्न मत मतान्तरों की पुस्तकों का अध्ययन करने के पश्चात वेद परमात्मा का ज्ञान है, निष्पक्ष हैं, सबके लिए हैं, सभी काल के लिए है, पूर्ण है और सनातन है इसे समझा और माना फिर प्रचलित अन्य मत–मतान्तरों के साथ उनकी तुलना और गहन विश्लेषण के पश्चात वेद को ही सर्वोपरि माना। उसका प्रचार–प्रसार से करने लगे।

परतन्त्रता की बेड़ी में जकड़ी मॉ भारती, अंग्रेजों की गुलामी से त्रस्त भारतवासी, जब स्वतन्त्रता के महत्व की सोच भी नहीं रखते थे उस समय स्वतन्त्रता सर्वोपरि है, का सन्देश की आवश्यकता थी समाज जाति, पाखण्ड, कुरीतियों के दलदल में फंसा हुआ था। ईश्वर के ज्ञान के स्थान पर काल्पनिक मान्यताओं के आधार पर प्रचलित विचारों से मानव समाज बंट रहा था। ऐसे समय में महर्षि एक मार्गदर्शक के रूप में आए और समस्त मानव जाति को संगठित करने की भावना से ईश्वरीय ज्ञान जो सर्वोपरि है सर्वमान्य हो सकता है उसे जन–जन तक पहुंचाने का लक्ष्य बनाया। इसलिए आर्य समाज के पहले नियम में – संसार की समस्त सत्य विद्याओं व ज्ञान का भण्डार परमात्मा को बताते हुए कहा – **सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदिमूल परमेश्वर है।**

परमात्मा के संबंध में भ्रान्ति न हो इसलिए परमात्मा के सही रूप का बोध कराते हुए लिखा –

"ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।"

समाज में व्याप्त कुरीतियों, अज्ञानता के कारण प्रचलित पाखण्ड और जातिगत व्यवस्था को दूर करने के लिए महर्षि के विचारों को जो वेद के अनुसार थे उसे जन–जन तक पहुंचाने की भावना से देश के अनेक मूर्धन्य, उच्चकोटि के विद्वान उच्च पदों पर आसीन गणमान्य, प्रतिष्ठित नागरिकों ने महर्षि के समक्ष एक संगठन आर्य समाज के रूप में स्थापना करने का निवेदन किया।

यद्यपि यही विचार इसके पूर्व कलकत्ता में कविवर रविन्द्रनाथ ठाकुर के पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने भी महर्षि के विचारों से प्रभावित होकर और उन विचारों को विस्तृत रूप से प्रचारित करने की भावना से महर्षि के समक्ष रखें। उन्हीं विचारों को मुम्बई में रखा गया जिसमें जस्टिस रानाडे जैसे प्रमुख व्यक्ति भी सम्मिलित थे। महर्षि ने कहा कि यदि आर्य समाज की स्थापना की गई तो लोग इसे भी अन्य सम्प्रदायों के समान एक सम्प्रदाय ही समझ लेगें और सनातन धर्म की एक और नई शाखा बन जायेगी। पहले ही दुर्भाग्य से सनातन धर्म के कई हिस्से हो चुके हैं और सनातन धर्मियों का संगठन कमजोर हो गया है।

इसलिए इस विचार को त्याग दो और केवल ईश्वरीय ज्ञान वेद का ही प्रचार करने को महत्व दो। वेद प्रचार करना ही मेरा लक्ष्य है। इस पर विद्वानों और गणमान्य नागरिकों ने कहा हम भी यही चाहते हैं और इसे सब मिलकर और अधिक शक्ति के साथ करें इसलिए आर्य समाज की स्थापना करना आवश्यक है हम इसे कोई अलग संगठन के रूप में नहीं चाहते हैं।

इस पर महर्षि ने यह कहा कि यदि आप लोगों की इच्छा सत्य सनातन ईश्वरीय ज्ञान वेद के प्रचार प्रसार की ही है तो इसकी स्थापना कर लीजिए, मैं तो पहले भी वेद प्रचार करता था और इसकी स्थापना के बाद भी करता रहूंगा। **किन्तु एक बात का ध्यान अवश्य रखें जो मैंने कह दिया उसे ही सर्वोपरि मत मान लेना, कालान्तर में मेरी कही गई बातों से भी कोई श्रेष्ठ विचार सम्मुख आवे तो उसे स्वीकार कर लेना।** अन्यथा **"बाबा वाक्यम् प्रमाणं"** की परत्परा चलती रहेगी। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के नियमों में एक नियम यह भी लिखा कि **"सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने मे सदा उदृत रहना चाहिए।"**

इस प्रकार महर्षि के विचारों से वर्ष प्रतिपदा के अवसर पर 1875 में आर्य समाज की स्थापना की गई। ईश्वरीय ज्ञान वेद के महत्व को समझते हुए अन्य सम्प्रदाय के व्यक्ति भी इसमें सम्मिलित हुए, उसका प्रत्यक्ष उदाहरण है आर्य समाज की स्थापना श्री अदेरजी मानकजी शाह पारसी सज्जन की बाड़ी में देश का पहला आर्य समाज कांकड़वाड़ी, मुम्बई में स्थापित हुआ। आर्य समाज के निर्माण के लिए हाजी अल्ला रक्खा ने 5100 रूपये का प्रथम दान 1875 में जो आज करोड़ों रूपये होती है, वह दिया है।

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य अज्ञान, अविद्या और कुरीतियों को दूर करना है। ईश्वरीय ज्ञान जो सनातन है, सर्वोपरि है, पूर्ण है, उसका प्रचार करना है। आर्य समाज का मूल उद्देश्य व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, विश्व कल्याण की भावना है जो किसी भी जाति, सम्प्रदाय और देश प्रदेश की भावना से ऊपर उठकर समस्त विश्व के लिए है। इसलिए आर्य समाज के नियम में एक नियम यह भी है – **"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"**

आर्य समाज का मन्तव्य जाति, वर्ण, ऊँच–नींच, भेदभाव को दूर कर प्राणीमात्र के कल्याण की भावना से काम करना **"सर्वे भवन्तु सुखिनः"** के विचार को प्रचारित करना। "सारे संसार को श्रेष्ठ बनाने में **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** के अनुसार सबकी उन्नति करने का है। इसलिए आर्य समाज के नियम में लिखा – **"प्रत्येक को अपनी उन्नति में ही संतुष्ट नहीं रहना चाहिए बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"**

आर्य समाज सनातन धर्म के आधार पर आध्यात्म की भावना का प्रचार प्रसार करने वाला आन्दोलन है जिसमें व्यक्ति से लेकर विश्व तक की उन्नति का परमात्मा की दिव्य वाणी के अनुसार उल्लेख है।

इसी भावना से आध्यात्म की दृष्टि से सत्संग, यज्ञ, वेद प्रवचन का कार्य निरन्तर चलता है। इसके अतिरिक्त गुरूकुल, छात्रावास, विद्यालय, महाविद्यालय, योग केन्द्र शिक्षा की दृष्टि से देश–विदेश में चल रहे हैं। सेवा के क्षेत्र में विधवा आश्रम, अनाथालय, वृद्धाश्रम तथा औषधालय, व्यायामशाला आदि हजारों की संख्या में चल रहे हैं।

आर्य समाज के माध्यम से अनेक ऐतिहासिक कार्यों को आज समाज ने शासन ने मान्य कर अपना लिया है।

गो मूत्र के सरलतम घरेलु औषधीय उपयोग

प्रतिदिन 50 मि.ली. भारतीय गाय का मूत्र सूती कपड़े की आठ परत कर छानकर प्रातः खाली पेट पियें। इस गोमूत्र के सेवन से एक घण्टे पहले और एक घण्टे बाद में कुछ खायें–पियें नहीं। इस प्रकार देशी गाय का मूत्र सेवन करने से पाईल्स, लकवा (पक्षघात), पथरी (मूत्र पित्त), दमा, सफेद दाग, टॉसिल्स, हार्ट अटैक (कोलेस्ट्रॉल), श्वेत प्रदर, अनियमित माहवारी, गठिया, डायबिटीज (मधुमेह), किडनी के रोग, रक्तचाप (ब्लड प्रेशर), सिरदर्द, टी. बी., कैंसर आदि रोग ठीक हो जाते हैं।

जलोदर : गोमूत्र 50 मिली और आधा ग्राम हरड़ (एरंड, तेल में भुनी हुई) रात्रि को गो दुग्ध से लेने से बवासीर रोग नष्ट हो जाता है।

पाण्डु (कामला में) : गोमूत्र 50 मिली. पुनर्नवा मूल का क्वाथ 100 मिली. दोनों मिलाकर प्रातः–सायं लें। शीघ्र लाभ होगा।

जुकाम में : गोमूत्र 50 मिली. प्रतिदिन पान करने से एवं गापालनस्य लेने से पुराना जुकाम ठीक हो जाता है।

उदरकृमि : गोमूत्र 50 मिली. 1 ग्राम अजवाइन चूर्ण के साथ प्रातःसायं सेवन करने से एक सप्ताह में कृमि नष्ट हो जाते हैं।,

संधिवात में : (जोड़ों का दर्द व गठिया) महारास्नादि के क्वाथ के साथ गोमूत्र 50 मिली. प्रतिदिन सुबह–शाम सेवन करने से यह रोग ठीक हो जाता है।

दांत दर्द या पायरिया में : दांत व दाढ़ दर्द में गोमूत्र बहुत अच्छा कार्य करता है। जब दांत दर्द असह्य हो जाए तो गोमूत्र का कुल्ला करें। इससे बड़ा चमत्कारी प्रभाव होता है। गोमूत्र से प्रतिदिन कुल्ला करने पर पायरिया रोग समाप्त हो जाता है।

यज्ञ का महत्व

वांछित कामनाओं को पूर्ण करने वाले कर्म को यज्ञ कहते हैं।

1. यज्ञ ही कल्पतरू है।
2. यज्ञ सर्व श्रेष्ठतम कर्म हैं।
3. यज्ञ करने वाले स्वर्ग को प्राप्त करते हैं।
4. यज्ञ से समस्त वायुमण्डल शुद्ध होता है।
5. यज्ञ से शरीर स्वस्थ एवं दीर्घायु होता है।
6. यज्ञ से पाप करने की प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है।
7. यज्ञ से मनुष्य ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखता है।
8. यज्ञ से शरीर, इन्द्रिय, मन एवं आत्मा शुद्ध होते हैं।
9. यज्ञ करो और यश पाओ, यज्ञ करने वाले यश पाते हैं।
10. यज्ञ से मनुष्य सर्वहित में अपना हित समझने लगता हैं।
11. यज्ञ से आत्मा को परमात्मा का सानिध्य प्राप्त होता है।
12. यज्ञ मानव को दानशील बनाता है, दूसरों को देना सिखाता है।
13. यज्ञ से वैर भाव की प्रवृत्ति नष्ट एवं मित्र भाव की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है।
14. यज्ञ से किसी दूसरे के पदार्थों को अपना समझने की प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है।
15. यज्ञ मनुष्य में त्याग की भावना उत्पन्न करता है क्योंकि स्वाहा शब्द कह रहा है, स्व का त्याग

सभाओं और समाजों को सार्वदेशिक सभा का निर्देश

जिन सभाओं या समाजों में निर्वाचन होना है किन्तु अभी तक निर्वाचन नहीं हुए है, उन्हें आगामी 31 अगस्त 2021 तक यथावत रखने का निर्णय लिया है। निर्वाचन तक वर्तमान कार्यकारिणी ही कार्यरत रहेगी।

यज्ञ दिवस 3 मई को सार्थक करने के लिए आर्यों का प्रयास

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर प्रांत के समस्त आर्य समाज और आर्य परिवारों ने कोरोना महामारी को समाप्त करने के लिए 3 मई एक साथ यज्ञ किया।

संस्कृति एवं आध्यात्मिक विभाग द्वारा मंत्री उषा ठाकुर की मौजूदगी में हुआ यज्ञ

महू। सोमवार को यज्ञ दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर विधानसभा एरिया में राज्य आगेद संस्थान आध्यात्मिक विभाग मध्यप्रदेश शासन द्वारा यज्ञ का आयोजन किया गया। जिस का संचालन एवं योजना आर्य समाज के संचालक प्रकाश आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री उषा ठाकुर द्वारा इस कोरोना के संकट को खत्म करने के लिए आहुतियां दी गई।

साथी इस मौके पर प्रकाश आर्य द्वारा भारतीय परंपरा में यज्ञ के महत्व पर उद्बोधन दिया गया। 36 देशों में एक साथ यज्ञ का आयोजन हुआ साथ ही मध्यप्रदेश में मंत्रिमंडल विभाग, सामाजिक कार्यकर्ता आदि व्यक्तियों ने वेबनार द्वारा प्रकाश आर्य के उद्बोधन का लाभ लिया और यज्ञ के महत्व को समझा। मंत्री उषा ठाकुर द्वारा करबद्ध प्रार्थना की गई है की यज्ञ से हम किसी भी संकट को समाप्त कर सकते हैं। उनके द्वारा महू के नागरिकों से करबद्ध प्रार्थना है कि इस संकट के समय में आप सभी का सहयोग आवश्यक है जिससे हम इस महामारी से निपट सकते हैं उषा दीदी दिन रात इस महामारी से निपटने के लिए लोगों को आध्यात्म से भी जोड़ रही हैं और प्रदेश में सबसे अधिक कार्य करने वाली विधानसभा में सबसे अधिक सुविधाएं एवं लाभ दिलाने वाली विधायक बनेंगी।

3 मई यज्ञ दिवस पर कोरोना के प्रभाव को नष्ट करने हेतु भारत वर्ष के सभी प्रांतों व 35 अन्य देशों में यज्ञ हुआ महू अंचल में भी घर घर यज्ञ हुआ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभी दिल्ली के निर्देश पर समस्त भारत वर्ष और विश्व की आर्य समाजों द्वारा 3 मई 2021 को घर घर यज्ञ किया गया। इसी तारतम्य में महू अंचल में विभिन्न परिवारों द्वारा अपने घरों में यज्ञ का आयोजन किया गया ताकि कोरोना की इस विभीषिका से जो परिजन दिवंगत हो चुके उन्हें शांति मिले तथा जो पीड़ित हैं उन्हें इस रोग से मुक्ति मिल सके। सभी ने कोरोना की समाप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। मुख्य आयोजन महू में संस्कृति एवं आध्यात्म विभाग द्वारा मंत्री उषा ठाकुर की मौजूदगी में अंतरराष्ट्रीय वैदिक वक्ता प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। जहां से एक वैबिनार के माध्यम सभी को संबोधित किया गया। यज्ञ में रवि आर्य, ओमप्रकाश आर्य, संगीता भार्गव एवं आशीष आर्य ने भी वैदिक मंत्रों से आहुतियां दी। ग्रामीण अंचलों में कोदरिया में आर्य समाज महू के महामंत्री श्रीधर गोस्वामी, द्रोणाचार्य दुबे, अजय गोयल, ग्राम बोरखेड़ी में ओमप्रकाश आर्य, किशनगंज में आर्य रामलाल प्रजापति धारनाका में श्रीमती चंचल टांक, महू नगर में कोषाध्यक्ष राजेश नेनावा, वेदप्रकाश आर्य, योगाचार्य उमेश चोरसिया आदि ने सपरिवार यज्ञ किया।

शोक समाचार

हे ईश्वर इस महान ध्विंशक रोग से शीघ्र दुनिया की रक्षा करें
दिवंगत आत्माओं को आर्य समाज की ओर से अश्रुपुरित श्रद्धांजलि

श्री गणपतिलाल जी वर्मा इन्दौर का देहावसान पूरे समाज की क्षति है, उनका जीवन एक आदर्श संयमी और पूर्ण रूप से वैदिक धर्मी के रूप में था। जो सबके लिए प्रेरणा स्त्रोत रहा और आगे भी रहेगा उनका भौतिक रूप से न रहना क्षति तो है, किन्तु उनका जीवन और उसकी अच्छाईया हम सब के मध्य में हमेशा रहेगी।

भजनोपदेशक पं. दिनेश दत्त जी का निधन उ.प्र. – भारतीय आर्य भजनोपदेशक पंडित दिनेश दत्त जी का 24 अप्रैल 2021 को हार्टअटैक के कारण आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

आचार्य ओमदत्त जी का निधन – आर्य समाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री शोभाराम प्रेमी जी के सुपुत्र वैदिक विद्धान आचार्य ओमदत्त जी दिनांक 30 अप्रैल 2021 कोरोना संक्रमण से आकस्मिक निधन हो गया।

श्री वेदरत्न जी आर्य इन्दौर – आर्य समाज के एक युवा कर्मठ पदाधिकारी थे। उनका आकस्मिक हमारे बीच से चले जाना आर्य समाज के लिए एक क्षति हैं। उन्होने अपने जीवन में कई वर्षो तक आर्य समाज का कार्य किया।

श्री अखिलेश जी शर्मा रतलाम – इनके पिता भी आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता थे एवं यह भी आर्य समाज के लिए पूर्ण रूप से समर्पित थे। अखिलेश जी का अचानक हमारे बीच से चले जाना एक बहुत बड़ी क्षति हैं।

श्री गोवर्धनलाल जी देवगढ़ – श्री गोवर्धन लाल जी आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता थे। उनका इस प्रकार आकस्मिक हम सब के बीच से जाना अत्यन्त दुःखविदारक हैं।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा इन सभी दिवंगत लोगो को श्रद्धांजली अर्पित करती हैं।

आर्यो जागों और जगाओं

समस्त आर्य जन अपने कर्तव्यों का पूर्ण समर्पण से निर्वाह करें।

आज देश पूरी तरह अनेक समस्याओं के कुचक्रों, आपदाओं, अनुशासन हीनताओं और अराजकता के भवर में फसते जा रहा हैं। दुषित राजनिती और इसकी आड़ में फलता फूलता जातिवाद और सम्प्रदाय वाद इस देश के अतीत को पूर्णतः छिन्न भिन्न करने में पूरी तरह जुड़ गया हैं।

सनातन संस्कृति की यह दुःखद चिन्ताग्रस्त जार जार होती हुई स्थिति की कल्पना भी आज से पूर्व नहीं की गई होगी। साम्प्रदायिक कट्टरता के कारण क्रुरता, बदसलुकी, हत्याये, बलात्कार, लुटपाट, आगजनी, का दर्दनाक भयानक मन्जर देश की आजादी के पूर्व बंगाल नौवाखाली से प्रारंभ हुआ था। परिणाम साम्प्रदायिकता के आधार पर ही देश का विभाजन हुआ। विभाजन के पश्चात ही पाकिस्तान को प्राप्त भुखण्ड से हिन्दू, सिख, गैर मुस्लिम परिवारों को पलायन हुआ उन पर लुटपाट, हत्या, बलात्कार, आगजनी जबरन महिलाओं से निकाह जैसे पाश्विक अमानविय अत्याचार भी होते रहे। इस्लाम के अनुयायियों ने कश्मीर, केरल और भारत के अनेक हिस्सों में उसे दोहराया और वर्तमान में भी चल रहा हैं।

इन सबका प्रभाव सनातन धर्मियों और राष्ट्र कि एकता और अखण्डता पर हुआ हैं, और होता जा रहा हैं। हिन्दू समाज सनातन धर्मी आपस मे ही आज भी दूरिया बनाने के विचारों से कुकर्मो से बाज नहीं आ रहे है। जातिवाद और छुआछुत का कलंक इस देश और सनातन धर्मियों को जिस प्रकार से क्षति पहुंचा रहा है, उसकी और अपने को हिन्दू कहने वाले व्यक्ति की समझ में अभी भी नहीं आ रहा हैं। हमारे अपने भाई अपने परिवार के सदस्य हमसे दूर होते जा रहे हैं और बड़ी संख्या में इसाई मुस्लिम और बौद्ध बनते जा रहे हैं। इस कारण हिन्दू बहुत जल्दी अल्पसंख्यक होने की स्थिति में आयेगा ऐसा भविष्य दिखाई दे रहा हैं।

स्वार्थ में लिप्त धन, पद, परिवार की दृष्टि से ही सोचने वाले लालची भेड़िये स्वधर्म स्वराष्ट्र की भावनाओं को त्याग कर अपना उल्लू सीधा करने में लगे हैं। इस कारण अंग्रेजो से विरासत में लिया **फूट डालो और शासन करों** के मंत्र को अपना कर जातिवाद को और बढ़ा रहे हैं। इतना ही नहीं जहर से बुझी हुई विचार धारा जिसकी रग रग में अनुशासन हीनता है, क्रुरता है हत्या, लुट, बलात्कार, जैसी विचार धारा में लिप्त हैं। हर दृष्टि से सरकार की व्यवस्था सुविधा का दोहन कर रहे हैं संविधान व न्यायायिक प्रक्रिया में विश्वास नहीं रखते उनके कारण ही जिनके अपराधिक सडयंत्रों के कारण देश के मूल निवासी भारत के अनेक हिस्सों से पलायन करने के लिए मजबुर हो रहे है। भारत

में हिन्दुओं से कई गुना अधिक बच्चे पैदा कर भारत की व्यवस्था को विकास को बुरी तरह से क्षति पहुंचा रहे है। देश के कानून की धज्जियां उड़ा रहे हैं। सनातन धर्मियो की भावनाओं को आहत पहुंचाते हुए औरंजेब जैसे कट्टर हिन्दू विरोधी था उसका अनुशरण करते हुए हिन्दू देवी देवताओं का अपमान कर रहे मन्दिर तोड़ रहे है षड़यन्त्र करके लवजिहाद के जैसे हथकंडों से लाखो हिन्दू लड़कियों का धर्म परिवर्तन कर रहे हैं।

मस्जिद, दरगाह, कब्रिस्तान के नाम भूमि का अधिग्रहण कर रहे हैं। स्वार्थवश अपनी बाते मनवाने और राजनैतिक संरक्षण प्राप्त करने के लिए उनको लाभ पहुंचाने वाली विचार धार को एक जुट होकर राजनिती मे प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयास करते हैं।

इधर स्वार्थ में अन्धा हिन्दू समाज अपनी कुर्सी और स्वार्थ में आकर पूर्व के हुए अत्याचारों और वर्तमान के गोदरा कांड और दिल्ली में घटित साम्प्रदायिक निन्दनीय बातो को भी भूल कर अस्तिन के सांपो को भी दूध पिला रहे हैं।

स्पष्ट है, एक तरफ साम्प्रदायिक विचार धारा को बढ़ाने के लिए एक पक्ष आगे बढ़ाने मे लगा है वही दूसरी और हिन्दू होते हुए भी साम्प्रदायिक विचार धारा के साथ ताल मेल बैठाने में लगा हुआ हैं। समाज संस्कृति और राष्ट्र के हितो को अनदेखा कर रहा हैं। यह भेदभाव हिन्दू नहीं समझ रहा है जातिवाद राजनिती के रोगो से पीड़ित विवेक शून्य नेता अभिनेता और कुछ अज्ञानी मुर्ख चापलूस और चूटकुले बाज कथाकार इस साम्प्रदायिक रूपी जहरीले सांप को दूध पिला रहे हैं।

यह सब होते हुए आर्य समाज चुप है, तो आर्य समाज का होने न होने का कोई अर्थ नहीं है। इसलिए आवश्यकता है हम जातिवाद के छुआछुत के इस पाप को समाज से नष्ट करने मे जुट जाये दलित और अछूत के इस शाब्दीक कलंक को नष्ट करे और सबके साथ मिलकर समाज की व्यवस्था बनाये।

इसी प्रकार राजनेताओं को भी समझाए की राजनिती से ज्यादा महत्व अपनी संस्कृति को दो संस्कृति बचेगी तो राष्ट्र बचेगा। स्वधर्म स्वराष्ट्र की भावना होनी चाहिए इनकी बलि चढ़ा कर मात्र कुर्सी और किसी पक्ष से बन्ध कर जो राजनेता सोचते है, कि उनकी स्थिति जयचंद से भी बत्तर हैं। जिसने गौरों का साथ तो दिया था पर मौत ही मिली। आर्यो स्वंय जगो और सबको जगाओं ऋषि दयानंद और श्रद्धानंद जैसे हमारे आदर्श पूर्वजों के बलिदान को सार्थक करों कृतज्ञ बनों। वेद कहता है – **नऋते श्रान्त्रस्य सखाय देवा।** अर्थात अर्कण्मय की देवी शक्तियां भी सहायता नहीं करती। एक शायर ने लिखा **जिसे खुद न हो होश अपने संभलने का, भगवान भी उसकी मदद नहीं करता।**

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

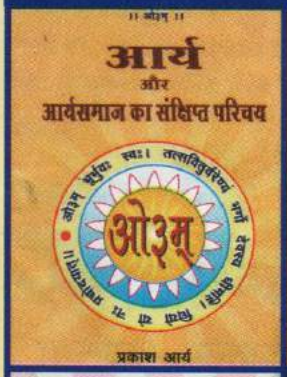

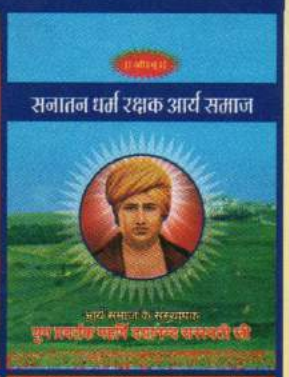

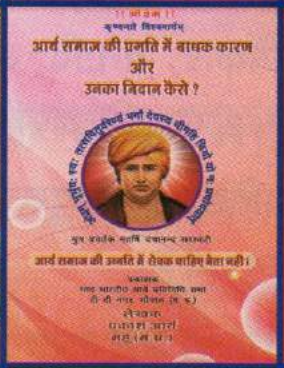

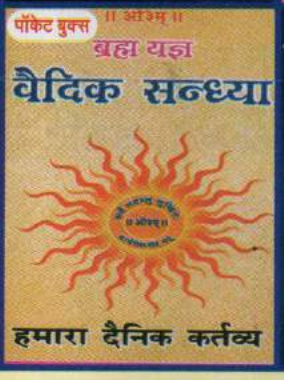

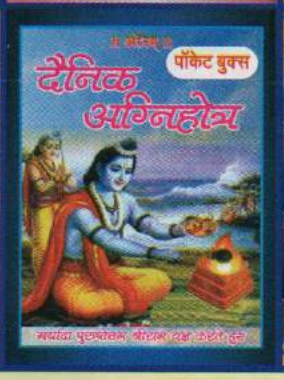

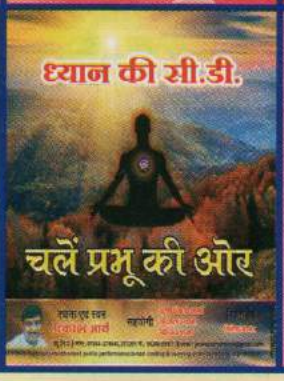

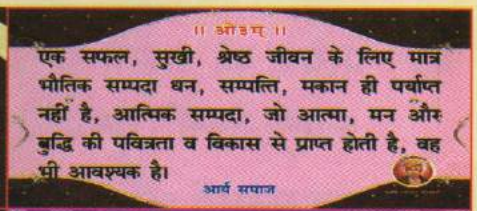

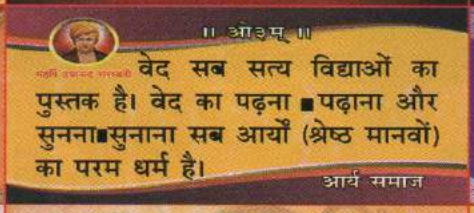

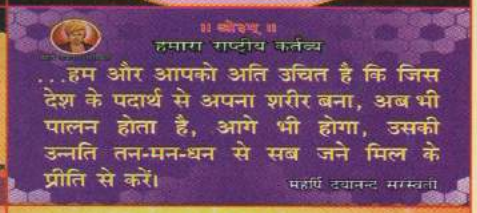

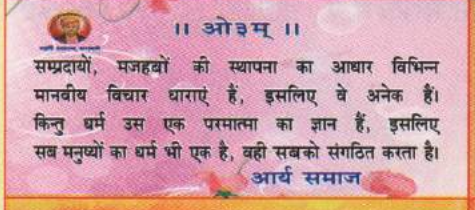

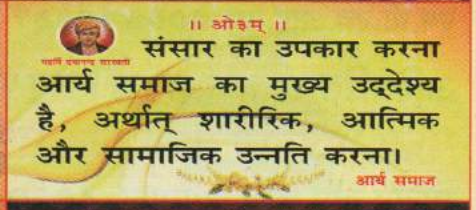

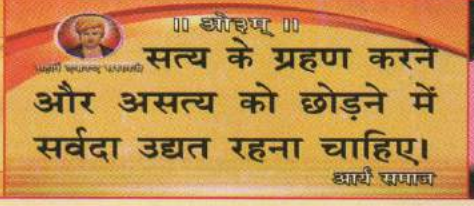

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2018-20

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - **प्रकाश आर्य, महू**

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062